सम्पन्न थे। सूफी संत अपनी उदारता एवं मानव
के प्रति समर्पित थे। मनुष्य मात्र से उनको प्रेम
था। वे जन्मभूमि के प्रेम भावना के
सिद्ध रहे हैं। सूफिया भी उनके धार्मिक जीवन
का अंग था और मानवीय प्रेम की गहराई का
अनुभव करना उनका लक्ष्य था। इस समय तक
भारत में सूफीमत के संत भारत में आने लगे थे।
रहस्यवाद और ... जिसकी इसी समय इस्लाम की
धार्मिक संकीर्णता के विरुद्ध मानव-प्रेम की प्रतिष्ठा
कर रहे थे। फलस्वरूप जीवन में नैतिक आचार
भक्ति का प्रादुर्भाव हुआ। सूफी-मत का/सन्तों का
सम्पर्क हिन्दुओं की भक्ति सम्प्रदाय से हुआ,
जिसके कारण एक सर्वथा नवीन जीवन-दर्शन
को जन्म दिया। जायसी ने इन दो विरोधी
धार्मिक विचारों के भेद को समझा था। अतः
उन्होंने अपने काव्य का विषय हिन्दू घर के
प्रेम कहानी को बनाया। कबीर भी उन्हीं के समान
सामाजिक एकता के लिए अपना निर्गुण मत चलाया
था। किन्तु, कबीर के मत में हिन्दू-मुस्लिम दोनों
के धार्मिक भावनाओं पर अधिक जोर था। उन्होंने
धार्मिक संकीर्णताओं और सामाजिक भेदभाव पर
चोट किया था। इसके विपरीत जायसी ने प्रेम
के माध्यम से दिलों को जीतने की कोशिश की।
जायसी मुसलमान होते हुए भी फारसी भाषा छोड़कर
लोकभाषा अवधी को अपनाया। वह उदार इस्लाम
होना की धारा भी इस्लाम में आस्थावान रहते हुए
हिन्दू-घर की कहानी को चुना। जायसी के लिए ऐसा
करना बड़े साहस की बात थी। क्योंकि उस समय भारत
में मुसलमान शासकों का राज था। समाज में इस्लाम धर्म
की रूढ़ियों और धार्मिक कट्टरता ऊपर से लेकर नीचे तक व्याप्त
हुआ थे। ऐसी स्थिति में जहाँ धार्मिक और सामाजिक
जीवन में तनाव और वैमनस्य भरा हुआ था,
वहीं एक मुसलमान कवि द्वारा हिन्दू-घर की कहानी को
अपने काव्य का विषय-वस्तु बनाना बड़ा ही जोखिम
पूर्ण काम था। जायसी ने इस जोखिम को साहस के साथ

P.T.O

यह साधारण घटना नहीं थी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस संबंध में लिखा है — "कबीर ने अपनी झाड़-फटकार के द्वारा हिंदुओं और मुसलमानों का कट्टरपन दूर करने के लिए जो प्रयत्न किया वह अधिकतर चिढ़ाने वाला सिद्ध हुआ, हृदय को स्पर्श करने वाला नहीं। मनुष्य और मनुष्य के बीच जो रागात्मक संबंध है, वह जायसी द्वारा व्यक्त हुआ। कबीर ने भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया। प्रत्यक्ष जीवन की एकता सामने रखने की आवश्यकता थी, जो जायसी द्वारा पूरी हुई।"

जायसी जिस काल में हुए वह काल एक तरह से सामाजिक उथल-पुथल का और परिवर्तन का काल था। अभी हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियाँ कहीं एक जगह पर मिलती प्रतीत नहीं होतीं। इस्लाम ने जिस प्रकार हिन्दू धर्म को आतंकित कर रखा था उसी प्रकार हिन्दू समाज भी मुसलमानों के प्रति घृणा से भरा था। हालांकि उनमें आपसी आदान-प्रदान था, किंतु स्थिति अनुकूल न थी। कबीर ने जहाँ खंडन-मंडन से उस खाई को पाटने का प्रयत्न किया था, उन्होंने धार्मिक भेदभाव को भी मिटाने का काम किया, किंतु अंतःकरण को जगाना अभी बाकी था। सूफी कवियों ने जो प्रेम की धारा प्रवाहित की थी उसी ने पुनर्जीवित करने का काम किया। यह वस्तु प्रेम से बढ़कर दूसरा कौन हो सकता था?

जिस प्रकार दूसरे के हृदय में प्रेम की तरंगें उठती हैं, उसी प्रकार हमारे हृदय में भी तरंगें उठती हैं। वियोग जैसे दूसरे को व्याकुल कर देता है, वैसे ही हमें भी करता है। प्रेम का हृदय जो हमारे पास है, वैसा ही उनके पास भी है। जिन बातों से दूसरों को सुख दुःख होता है, उन्हीं बातों से हमें भी सुख-दुःख का अनुभव होता है। इस हृदय का पुनर्जीवीकरण सूफी कवियों की प्रेम कहानियों के द्वारा हुआ है। अपनी कहानियों के माध्यम से प्रेम-मार्ग दिखलाते हुए उन्होंने आचरण की सात्विकता पर जोर दिया है। उन्होंने सामान्य जीवन दशाओं का चित्र उपस्थित कर मनुष्य मात्र के हृदय पर एक-सा प्रभाव उत्पन्न करने की कोशिश की। सूफी कवियों की प्रेम कहानियों में कथा की

अलौकिकता को स्वीकार किया गया। परीक्षा स्वरूप और मार्गों के द्वारा प्राप्त करने का उपाय दोनों जातियों में एक समान स्वीकार किया गया। इस तरह से दोनों जातियों में तात्विक एकता स्थापित करने की चेष्टा की गयी।

इसी समन्वय की भावना देखते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है — "इन्होंने मुसलमान होकर हिन्दू घरों की कहानियाँ हिन्दुओं की बोली में सहृदयता से कहकर उनके जीवन को मर्मस्पर्शी बना दिया।" कहने का अर्थ यह कि हिन्दू घरों में हिन्दुत्व की पूरी प्रतिष्ठा भर दी गई।

इस तरह से 'पद्मावत' काव्य में प्रेम-पद्धति का अनुसरण सूफियों के कारण [illegible] शैली की प्रेम कथा कही गयी। दूसरी तरफ, भारतीय शैली में प्रेमोत्कर्ष का चित्रण किया गया। नायिका को प्रेमोत्कर्ष का प्रधान बना दिया गया। इस प्रकार 'पद्मावत' में प्रेम-व्यंजना में भारतीय और फारसी शैलियों दोनों का मिश्रण है। संयोग और वियोग दोनों पद्धतियों के यहाँ समन्वय देखा जा सकता है। भारतीय पद्धति के अनुसार संयोग वर्णन में भोगों का प्रधान रखा गया है और वियोग वर्णन में वेदना की अभिव्यक्ति हुई है। फारसी शैली के अनुसार संयोग में आदर्शात्मक और वियोग में ऊहात्मक उक्तियों का भी समावेश है। भारतीय लोक व्यवहार के अनुसार आत्मा के प्रसार करने वाला प्रेम और फारसी पद्धति के अनुसार भावनाओं का एकांतिक लोक-बाह्य और स्वर्गिक आभास के रूप में चित्रित होने वाला प्रेम — इन दोनों की समान रूप से व्यंजना मिलती है। अतः कहा जा सकता है कि 'पद्मावत' में सूफीमत और हमारे भारतीय दर्शन का सम्मिश्रण है।

P.G. Semester I
CC-3

Padmavat ek sufi kavya